✺ 4 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] ज्ञान की पढ़ाई कहा जाता है। बाप की पढ़ाई से हमारी ज्योत जग गई है, इनको ही सच्ची-सच्ची दीपावली कहा जाता है।

2] आत्मा ही आरगन्स बिगर आवाज़ नहीं कर सकती, शरीर में जब आयी है, तब आवाज़ करती है।

3] बाप कहते हैं इस संगम पर ही आकर इस शरीर का लोन लेता हूँ अर्थात् प्रकृति का आधार लेता हूँ। गीता में भी यह अक्षर है, और कोई शास्त्र का नाम बाबा नहीं लेते हैहं। एक ही गीता है। यह है ही राजयोग की पढ़ाई। नाम रख दिया है गीता। इसमें पहले-पहले लिखा है भगवानुवाच।

4] अब भगवान् किसको कहा जाता है? भगवान् है निराकार, उनको अपना शरीर तो है नहीं। वह है निराकारी दुनिया, जहाँ आत्मायें रहती हैं। सूक्ष्मवतन को दुनिया नहीं कहा जाता। यह है स्थूल साकार दुनिया वह है आत्मओं की दुनिया। खेल सारा यहाँ चलता है। निराकारी दुनिया में आत्मायें कितनी छोटी-छोटी हैं। फिर पार्ट बजाने आती हैं। यह ख्यालात तुम बच्चों की ही बुद्धि में बिठाये जाते हैं। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। वेद-शास्त्र को कहा जाता है भक्ति, ज्ञान नहीं।

5] कुम्भ के मेले में बहुत छोटे-छोटे नांगे लोग आते हैं। दवाई खिलाते हैं, जिससे कर्मेन्द्रियां ठण्डी पड़ जाती हैं। तुम्हारा तो है योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश में करना। योगबल से वश होते होते आखरीन ठण्डी हो ही जायेंगी।

6] बाप आये हैं ऐसे स्वर्गधाम में ले जाने। तुमको लायक बना रहे हैं। माया तुमको न-लायक बनाती है अर्थात् स्वर्ग वा जीवनमुक्ति धाम में चलने लायक नहीं। तो बाप बैठ लायक बनाते हैं। उसके लिए प्योरिटी है फर्स्ट।

7] तुम जानते हो स्व आत्मा को कहा जाता है। हम आत्मा जो पवित्र थी, शुरू से लेकर 84 का चक्र लगाया। वह भी बाप बताते हैं, तुमने पहले-पहले शिव की भक्ति शुरू की। तुम तो अव्यभिचारी भक्त थे। बाप के सिवाए कोई समझा न सकें। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों तुमने पहले-पहले यह जन्म लिया। कोई साहूकार होगा तो कहेंगे ना कि आगे जन्म में इसने ऐसा कर्म किया है। कोई रोगी होगा तो कहेंगे पिछले कर्म का हिसाब-किताब है। अच्छा, इन लक्ष्मी-नारायण ने कौन से कर्म किये? यह बाप बैठ समझाते हैं। इनके 84 जन्म पूरे हुए फिर फर्स्ट नम्बर में आना है। भगवान् संगमयुग पर ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। अभी तुम समझ रहे हो कि बाबा हमें राजयोग सिखला रहे हैं। फिर भी तुम भूल जायेंगे। कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति भी बाप ने समझाई है, रावण राज्य में तुम्हारे कर्म विकर्म हो जाते हैं। वहाँ कर्म अकर्म होते हैं। वहाँ रावण राज्य ही नहीं। विकार होता नहीं। वहाँ है ही योगबल जबकि योजबल से हम विश्व के मालिक बनते हैं तो जरूर पवित्र दुनिया भी चाहिए। पुरानी दुनिया को अपवित्र, नई दुनिया को पवित्र दुनिया कहा जाता है। वह है वाइसलेस वर्ल्ड, यह है विशश वर्ल्ड। बाप की आकर वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। सतयुग है शिवालय। शिवबाबा आकर तुमको सतयुग के लिए लायक बना रहे हैं।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना आत्मा में लाइट आयेगी, ज्ञानवान आत्मा चमकीली बन जाती है।

2] जो पक्के योगी हैं, जिन्होंने योगबल से अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाया है, जो योग में ही रहने की मेहनत करते हैं, उन्हें माया जरा भी तंग नहीं कर सकती। जब तुम पक्के योगी बन जायेंगे तब लायक बनेंगे। लायक बनने के लिए प्योरिटी फर्स्ट है।

3] याद से ही विकर्म विनाश होंगे।

4] कर्मेन्द्रियां वश तब होंगी जब योग में तुम पक्के होंगे। कर्मेन्द्रियां शान्त हो जायेगी। इसमें बड़ी मेहनत है।

...2

✺ 4 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ धारणा-

1] अब पुरानी दुनिया का विनाश भी सामने खड़ा है। अभी ही बाप से ज्ञान लेना है और योग भी सीखना है।

2] फरिश्ता अर्थात् पुराने संसार की आकर्षण से मुक्त, न संबंध रूप में आकर्षण हो, न अपनी देह वा किसी देहधारी व्यक्ति या कोई वस्तु की तरफ आकर्षण हो, ऐसे ही पुराने संस्कार की आकर्षण से भी मुक्त- संकल्प, वृत्ति वा वाणी के रूप में कोई संस्कार की आकर्षण न हो। जब ऐसे सर्व आकर्षणों से अथवा व्यर्थ समय, व्यर्थ संग, व्यर्थ वातावरण से मुक्त बनेंगे तब कहेंगे डबल लाइट फरिश्ता।

✺ सेवा-

1] आत्मा पवित्र होती है तो आयु भी बड़ी हो जाती है। हेल्थ, वेल्थ और हैपीनेस सब मिल जाती है। यह भी तुम बोर्ड पर लिख सकते हो। हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस फार 21 जनरेशन वन सेकण्ड। बाप से यह वर्सा मिलता है 21 जन्मों के लिए। कई बच्चे बोर्ड लगाने से भी डरते हैं। बोर्ड तो सबके घर पर रहता ही है। तुम सर्जन के बच्चे हो ना। तुमको हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस सब मिलती है। तो तुम फिर औरों को दो। दे सकते हो तो क्यों नहीं बोर्ड पर लिख देते हो ! तो मनुष्य आकर समझें कि भारत में आज से 5 हज़ार वर्ष पहले हेल्थ-वेल्थ थी, पवित्रता भी थी। बेहद के बाप का वर्सा एक सेकेण्ड में। तुम्हारे पास बहुत आयेंगे। तुम बैठ समझाओ यही भारत सोने की चिड़िया थी, इन्हों का राज्य था। फिर यह कहाँ गये ? 84 जन्म पहले यह लेंगे। यह नम्बरवन है ना, यही फिर लास्ट में आते हैं। बाप कहते हैं अब तुम्हारा 84 का चक्र पूरा हुआ। फिर शुरू होना है। बेहद का बाप ही आकर यह पद प्राप्त कराते हैं। सिर्फ कहते हैं, तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे। 84 जन्मों को जानकर बाप से वर्सा लेना है। परन्तु पढ़ाई तो चाहिए ना।

2] लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जाकर तुम पूछ सकते हो। आपको मालूम है इन्हों ने यह पद कैसे पाया? विश्व के मालिक कैसे बने? बाप कहते हैं तुम नहीं जानते हो, हम जानते हो। तुम बाप के बच्चे ही कह सकते हो कि हम आपको बता सकते हैं– इन्हों ने यह पद कैसे पाया। इन्हों ने ही पूरे 84 जन्म लिये फिर पुरूषोत्तम संगमयुग पर आकर बाप ने राजयोग सिखलायार है और राजाई दी है। उसके पहले नम्बरवन पतित थे फिर नम्बरवन पावन बनें।

3] यह सब बातें वही समझ सकते हैं जिसने शुरू से शिव की भक्ति की होगी। मन्दिर बनाने वालों से तुम पूछो– आपने यह मन्दिर बनाया है, इन्होंने यह पद कैसे पाया? इन्हों का राज्य कब था? फिर यह कहाँ गये? अब यह कहाँ है? तुम 84 की कहानी बताओ तो बहुत खुश हो जायेंगे। चित्र पॉकेट में पड़ा हो। तुम किसको भी समझा सकते हो। शुरू से जिसने शिव की भक्ति की होगी, वह सुनते रहेंगे खुश होते रहेंगे। तुम समझ जायेंगे यह हमारे कुल का है। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज युक्तियाँ बतलाते हैं। तुमको अब समझ मिली है परमपिता परमात्मा ही सर्व का सद्गति दाता है। 21 जन्मों के लिए सतयुगी बादशाही मिल जाती है। 21 जन्मों का वर्सा इस पढ़ाई से ही मिलता है। टॉपिक भी बहुत हैं, वेश्यालव और शिवालय किसको कहा जाता है– इस टॉपिक पर हम परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी बता सकते हैं। लक्ष्मी-नारायण के 84 जन्मों की कहानी– यह भी टॉपिक है। विश्व में शान्ति कैसे थी, फिर अशान्ति कैसे हुई, अब फिर शान्ति कैसे स्थापन हो रही है– यह भी टॉपिक है।